(हिन्दी दैनिक)

R.N.I. No. Utthin/2018/76731

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)

दि ग्राम टुडे

उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित

वर्ष: 08 अंक: 234 देहरादून, रविवार 17 मई 2026 पृष्ठ : 12

मिट्टी बचेगी तो खेती बचेगी केवीके और आईआईपीआर ने किसानों को दिया संतुलित उर्वरक उपयोग का मंत्र

जैविक खाद, वमह्न कम्पोस्ट और फसल चक्र अपनाने पर जोर, वैज्ञानिकों ने किसानों को किया जागरूक

दि ग्राम टुडे, संजय मौर्य यूपी हेड।

कानपुर। सतत कृषि और मृदा संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान (आईआईपीआर) कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम तरी पाठकपुर, विकास खंड चौबेपुर में किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य विषय "संतुलित उर्वरक उपयोग" रहा, जिसमें किसानों को मृदा स्वास्थ्य और टिकाऊ खेती के महत्व की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम ने फसल उत्पादकता बढ़ाने, खेती की लागत कम करने और पर्यावरणीय जोखिमों को घटाने के लिए जैविक, जैव एवं अकार्बनिक पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग पर विशेष जोर दिया। वैज्ञानिकों ने बताया कि जैविक खादों और जैव उर्वरकों का समन्वित उपयोग मृदा एवं जल संरक्षण उपायों को और अधिक प्रभावी बनाता है।

विशेषज्ञों ने मेड़बंदी, मल्चिंग, हरी खाद, आवरण फसलों के प्रयोग, मिश्रित खेती और फसल चक्र जैसी आधुनिक कृषि प्रणालियों को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि इन उपायों से मृदा अपरदन और जल बहाव में कमी आती है तथा खेतों की नमी लंबे समय तक सुरक्षित रहती है।

कार्यक्रम के दौरान रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले नुकसान पर भी चर्चा की गई। वैज्ञानिकों ने किसानों से जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट और गोबर खाद के निर्माण एवं उपयोग में आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि खेत स्तर पर जैव उर्वरकों के उपयोग से मृदा की गुणवत्ता बेहतर होती है और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।

कृषि वैज्ञानिकों ने कहा कि मजबूत और सतत कृषि व्यवस्था तभी संभव है जब अनुसंधान संस्थान, कृषि विकास एजेंसियां और किसान मिलकर कार्य करें। विशेषज्ञों ने सब्जी एवं फल फसलों की उत्पादकता बनाए रखने के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को अत्यंत आवश्यक बताया।

कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. दीपक मिश्रा तथा भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अभिषेक बोहरा, डॉ. सेंथिल कुमार एवं डॉ. आशीष रंजन ने किसानों को तकनीकी जानकारी प्रदान की।

इस जागरूकता कार्यक्रम में लगभग 33 किसानों एवं 7 महिला कृषकों ने सक्रिय सहभागिता की। संवादात्मक सत्र के दौरान किसानों ने जैविक एवं जैव उर्वरकों की उपलब्धता, निर्माण विधि, उपयोग के तरीके तथा उपयुक्त समय से जुड़ी जानकारी प्राप्त की।

सलाउद्दीन की शनिवार सुबह इलाज के दौरान मौत हो गई। उन्हें
मंगलवार रात, तेज रफ्तार कार ने ...

अमर उजाला 17/05/2026

... के ... वह ...
परिजन ने उन्हें हैलट में भर्ती कराया था। (संवाद)

उर्वरक का संतुलित उपयोग करें किसान

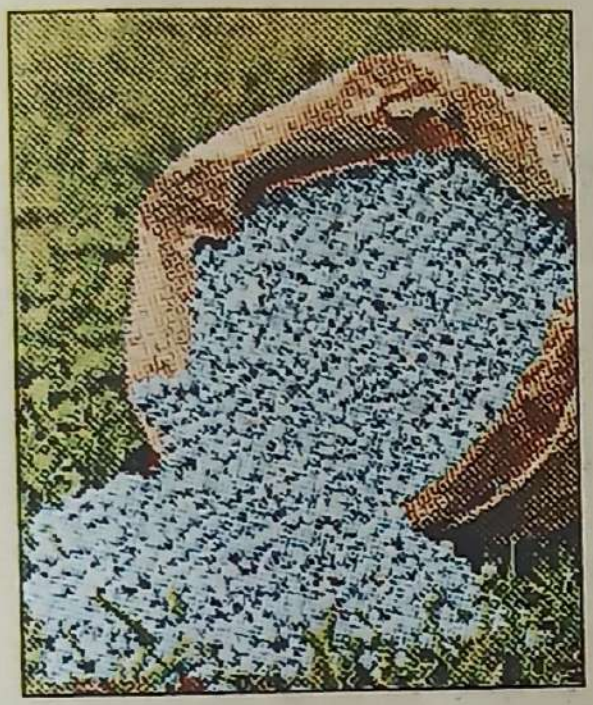

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कृषि विज्ञान केंद्र दिलीपनगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के बैनर तले संयुक्त रूप से किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विकास खंड चौबेपुर के ग्राम तरी पाठकपुर में आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने किसानों को खेतों में संतुलित उर्वरकों के प्रयोग की सलाह दी। इस मौके पर विज्ञानी डॉ. खलील खान, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. दीपक मिश्रा, डॉ. अभिषेक बोहरा, डॉ. सेंथिल कुमार एवं डॉ. आशीष रंजन मौजूद रहे। (ब्यूरो)

जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों के उत्पादन और उपयोग में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की आवश्यकता

कानपुर, 16 चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के संयुक्त रूप ग्राम तरी पाठकपुर विकास खंड चौबेपुर, जनपद कानपुर नगर में संतुलित उर्वरक उपयोग विषय पर कृषकों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य मृदा संरक्षण तथा सतत कृषि के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को एक आवश्यक घटक के रूप में बढ़ावा देना है। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम ने फसल उत्पादकता बढ़ाने, लागत कम करने तथा पर्यावरणीय जोखिमों को न्यूनतम करने के लिए जैविक, जैव एवं अकार्बनिक पोषक स्रोतों के समन्वित उपयोग के महत्व पर जोर दिया। वैज्ञानिकों ने बताया कि जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों का संतुलित उपयोग मृदा एवं जल संरक्षण उपायों को प्रभावी रूप से पूरक बनाता है। मेड़बंदी,मल्चिंग, हरी खाद, आवरण फसलों के उपयोग तथा मिश्रित खेती एवं फसल चक्र जैसी उन्नत फसल प्रणालियों के महत्व पर विशेष बल दिया गया। इन उपायों से बहाव एवं मृदा अपरदन में कमी आती है, मृदा नमी संरक्षित रहती है। रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों का उल्लेख करते हुए वैज्ञानिकों ने जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों के उत्पादन और उपयोग में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने वर्मी कम्पोस्टिंग, गोबर खाद निर्माण तथा खेत स्तर पर जैव उर्वरकों के उपयोग को अपनाने की दृढ़ता से वकालत की। उन्होंने कहा कि सुदृढ़ एवं सतत कृषि प्रणाली की ओर यह परिवर्तन कृषि विकास एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों तथा कृषक समुदायों के समन्वित प्रयासों से ही संभव होगा। विशेषज्ञों ने मृदा स्वास्थ्य बनाए रखते हुए सब्जी एवं फल फसलों की उत्पादकता बनाए रखने हेतु संतुलित पोषक तत्व उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. दीपक मिश्रा तथा भारतीय दलन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अभिषेक बोहरा, डॉ. सेंथिल कुमार एवं डॉ. आशीष रंजन द्वारा किसानों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम में लगभग 33 किसानों एवं सात महिला कृषकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 17 अंक : 311 कानपुर, रविवार 17 मई 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

केवीके एवं आईआईपीआर द्वारा किसानों को किया गया जागरूक

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के संयुक्त रूप ग्राम तरी पाठकपुर विकास खंड चौबेपुर, जनपद कानपुर नगर में संतुलित उर्वरक उपयोग विषय पर कृषकों को जागरूक किया गया।कार्यक्रम का उद्देश्य मृदा संरक्षण तथा सतत कृषि के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को एक आवश्यक घटक के रूप में बढ़ावा देना है।कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम ने फसल उत्पादकता बढ़ाने, लागत कम करने तथा पर्यावरणीय जोखिमों को न्यूनतम करने के लिए जैविक, जैव एवं अकार्बनिक पोषक स्रोतों के समन्वित उपयोग के महत्व पर जोर दिया। वैज्ञानिकों ने बताया कि जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों का संतुलित उपयोग मृदा एवं जल संरक्षण उपायों को प्रभावी रूप से पूरक बनाता है। मेड़बंदी, मल्चिंग, हरी खाद, आवरण फसलों के उपयोग तथा मिश्रित खेती एवं फसल चक्र जैसी उन्नत फसल प्रणालियों के महत्व पर विशेष बल दिया गया। इन उपायों से बहाव एवं मृदा अपरदन में कमी आती है, मृदा नमी संरक्षित रहती है। रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों का उल्लेख करते हुए वैज्ञानिकों ने जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों के उत्पादन और उपयोग में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने वर्मी कम्पोस्टिंग, गोबर खाद निर्माण तथा खेत स्तर पर जैव उर्वरकों के उपयोग को अपनाने की दृढ़ता से वकालत की। उन्होंने कहा कि सुदृढ़ एवं सतत कृषि प्रणाली की ओर यह परिवर्तन कृषि विकास एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों तथा कृषक समुदायों के समन्वित प्रयासों से ही संभव होगा। विशेषज्ञों ने मृदा स्वास्थ्य बनाए रखते हुए सब्जी एवं फल फसलों की उत्पादकता बनाए रखने हेतु संतुलित पोषक तत्व उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान डॉक्टर अरुण कुमार सिंह डॉक्टर दीपक मिश्रा तथा भारतीय दलन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉक्टर अभिषेक बोहरा, डॉक्टर सेंथिल कुमार एवं डॉक्टर आशीष रंजन द्वारा किसानों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम में लगभग 33 किसानों एवं 07 महिला कृषकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। संवादात्मक सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने जैविक एवं जैव उर्वरक आधारित आदानों की उपलब्धता, तैयारी, उपयोग की विधियों तथा उपयुक्त समय के संबंध में जानकारी प्राप्त की।

अमर भारती
एक उम्मीद
04 प्रदेश, 06 संस्करण
लखनऊ, वर्ष: 15, अंक: 139, पृष्ठ: 12, मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com रविवार, 17 मई 2026 शक संवत् 1948

केवीके और आईआईपीआर से किसानों को किया गया जागरूक

अमर भारती ब्यूरो

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान कानपुर के संयुक्त रूप ग्राम तरी पाठकपुर विकास खंड चौबेपुर, जनपद कानपुर नगर में संतुलित उर्वरक उपयोग विषय पर कृषकों को जागरूक किया गया।कार्यक्रम का उद्देश्य मृदा संरक्षण तथा सतत कृषि के लिए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को एक आवश्यक घटक के रूप में बढ़ावा देना है।कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की टीम ने फसल उत्पादकता बढ़ाने, लागत कम करने तथा पर्यावरणीय जोखिमों को न्यूनतम करने के लिए जैविक, जैव एवं अकार्बनिक पोषक स्रोतों के समन्वित उपयोग के महत्व पर जोर दिया। वैज्ञानिकों ने बताया कि जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों का संतुलित उपयोग मृदा एवं जल संरक्षण उपायों को प्रभावी रूप से पूरक बनाता है। मेड़बंदी, मल्चिंग, हरी खाद, आवरण फसलों के उपयोग तथा मिश्रित खेती एवं फसल चक्र जैसी उन्नत फसल प्रणालियों के महत्व पर विशेष बल दिया गया। इन उपायों से बहाव एवं मृदा अपरदन में कमी आती है, मृदा नमी संरक्षित रहती है। रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों का उल्लेख करते हुए वैज्ञानिकों ने जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों के उत्पादन और उपयोग में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने वर्मी कम्पोस्टिंग, गोबर खाद निर्माण तथा खेत स्तर पर जैव उर्वरकों के उपयोग को अपनाने की दृढ़ता से वकालत की। उन्होंने कहा कि सुदृढ़ एवं सतत कृषि प्रणाली की ओर यह परिवर्तन कृषि विकास एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों तथा कृषक समुदायों के समन्वित प्रयासों से ही संभव होगा। विशेषज्ञों ने मृदा स्वास्थ्य बनाए रखते हुए सब्जी एवं फल फसलों की उत्पादकता बनाए रखने हेतु संतुलित पोषक तत्व उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान आशीष रंजन द्वारा किसानों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम में लगभग 33 किसानों एवं 07 महिला कृषकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।